भारतीय समाज में धर्म की भूमिका : एक अध्ययन

शशि भूषण कुमार

शोध–छात्र, ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर

सारांश

भारतीय समाज की संरचना, संस्कृति और जीवन–दृष्टि में धर्म की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी रही है। धर्म केवल आस्था, पूजा–पद्धति या धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित न रहकर सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामों को प्रभावित करने वाला एक सशक्त तत्त्व है। यह सामाजिक नियंत्रण, नैतिक मूल्यों के विकास, सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण तथा सामाजिक एकता एवं समरसता की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय समाज में धर्म ने व्यक्ति के आचार–विचार, व्यवहार, सामाजिक संबंधों तथा कर्तव्यों को दिशा प्रदान की है, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक व्यवस्था एवं अनुशासन का निर्माण संभव हुआ है।

इतिहास के विभिन्न चरणों में धर्म ने शिक्षा, राजनीति एवं सामाजिक संस्थाओं को भी गहराई से प्रभावित किया है। प्राचीन काल में शिक्षा का आधार धार्मिक ग्रंथों एवं संस्थाओं पर आधारित था, वहीं मध्यकाल एवं आधुनिक काल में भी धर्म सामाजिक जीवन के केंद्र में बना रहा। धर्म ने न केवल व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास को प्रोत्साहित किया, बल्कि नैतिकता, कर्तव्यपरायणता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को भी सुदृढ़ किया।

प्रस्तुत शोध–पत्र में भारतीय समाज में धर्म की ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक भूमिका का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, यह भी स्पष्ट किया गया है कि आधुनिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं वैश्वीकरण के प्रभाव के बावजूद धर्म की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है, बल्कि इसके स्वरूप में परिवर्तन आया है। वर्तमान समय में धर्म अधिकतर व्यक्तिगत आस्था का विषय बनता जा रहा है, किंतु सामाजिक नैतिकता, सांस्कृतिक पहचान एवं सामूहिक जीवन में इसकी भूमिका आज भी महत्वपूर्ण बनी हुई है।

मुख्य शब्द – धर्म, भारतीय समाज, संस्कृति, नैतिक मूल्य, सामाजिक समरसता

प्रस्तावना

भारत को प्रायः "धर्मों की भूमि" कहा जाता है, जहाँ विविध धार्मिक परंपराएँ सह–अस्तित्व एवं सहिष्णुता के आधार पर विकसित हुई हैं। यहाँ हिंदू, बौद्ध, जैन, इस्लाम, सिख एवं ईसाई जैसे अनेक धर्म न केवल ऐतिहासिक रूप से स्थापित हैं, बल्कि आज भी सामाजिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। भारतीय समाज की विशेषता इसकी धार्मिक बहुलता है, जिसने विभिन्न समुदायों के बीच सह–अस्तित्व, सहिष्णुता एवं समन्वय की भावना को विकसित किया है।

भारतीय समाज में धर्म जीवन के प्रत्येक पक्ष जन्म से मृत्यु तक गहराई से जुड़ा हुआ है। व्यक्ति के संस्कार, रीति–रिवाज, आचार–विचार, पारिवारिक संबंध एवं सामाजिक व्यवहार सभी पर धर्म का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। धर्म केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक नियमों, कर्तव्यों, अधिकारों एवं जीवन–मूल्यों की व्याख्या भी करता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से धर्म को एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था माना जाता है, जो सामाजिक नियंत्रण एवं व्यवस्था बनाए रखने में सहायक होती है। यह व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करने के साथ–साथ समाज में अनुशासन, नैतिकता एवं संतुलन स्थापित करता है। धर्म के माध्यम से समाज में पाप–पुण्य, उचित–अनुचित एवं कर्तव्य–अकर्तव्य की अवधारणाएँ विकसित होती हैं, जो सामाजिक जीवन को दिशा प्रदान करती हैं।

इसके अतिरिक्त, धर्म भारतीय संस्कृति का आधार भी है। कला, साहित्य, संगीत, नृत्य एवं लोक परंपराएँ धर्म से गहराई से जुड़ी हुई हैं, जो सांस्कृतिक विरासत को सहेजने एवं आगे बढ़ाने में सहायक होती

हैं। इस प्रकार, धर्म भारतीय समाज की संरचना एवं विकास का एक अभिन्न अंग रहा है, जिसकी भूमिका आज भी उतनी ही प्रासंगिक है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

वर्तमान युग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण एवं भौतिकवाद के तीव्र प्रभाव के कारण सामाजिक संरचना एवं जीवन–मूल्यों में व्यापक परिवर्तन हो रहा है। ऐसे परिवर्तित परिप्रेक्ष्य में धर्म की भूमिका को समझना अत्यंत आवश्यक हो जाता है, क्योंकि धर्म न केवल व्यक्ति के आध्यात्मिक जीवन को प्रभावित करता है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक पक्षों को भी दिशा प्रदान करता है।

भारतीय समाज में धर्म एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था के रूप में कार्य करता रहा है, जिसने समाज के संगठन, अनुशासन एवं एकता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान समय में जहाँ पारंपरिक मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है, वहीं यह जानना आवश्यक है कि धर्म आज के समाज में किस प्रकार अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है तथा उसकी भूमिका में क्या परिवर्तन आए हैं।

यह अध्ययन इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह भारतीय सामाजिक संरचना को समझने में सहायक सिद्ध होता है। धर्म के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों, परंपराओं एवं जीवन–शैलियों का समन्वय संभव होता है। इसके अतिरिक्त, धर्म नैतिक मूल्यों जैसेकृसत्य, अहिंसा, करुणा एवं सहिष्णुताकृका विकास करता है, जो सामाजिक अनुशासन एवं संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।

साथ ही, यह अध्ययन सामाजिक समरसता एवं सांस्कृतिक एकता के विश्लेषण में भी सहायक है, क्योंकि धर्म विभिन्न समुदायों को एक साझा सांस्कृतिक धारा में जोड़ता है। आधुनिक समाज में, जहाँ विविधता के बीच एकता बनाए रखना चुनौतीपूर्ण है, वहाँ धर्म की भूमिका का मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

अतः यह अध्ययन आधुनिक संदर्भ में धर्म की बदलती भूमिका का आकलन करते हुए उसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक महत्त्व को स्पष्ट करने का प्रयास करता है, जिससे समाज में संतुलन एवं समन्वय स्थापित किया जा सके।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज में धर्म की बहुआयामी भूमिका का वैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। इस व्यापक उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है–

1. **भारतीय समाज में धर्म की अवधारणा का अध्ययन करना**– इसके अंतर्गत धर्म के अर्थ, स्वरूप, विशेषताओं एवं ऐतिहासिक विकास को समझने का प्रयास किया गया है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है।
2. **सामाजिक जीवन पर धर्म के प्रभाव का विश्लेषण करना**– इस उद्देश्य के अंतर्गत यह अध्ययन किया जाएगा कि धर्म किस प्रकार व्यक्ति के आचार–विचार, व्यवहार, सामाजिक संबंधों एवं सामाजिक संस्थाओं को प्रभावित करता है।
3. **धर्म एवं संस्कृति के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट करना–** इस बिंदु में यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि धर्म और संस्कृति एक–दूसरे के पूरक कैसे हैं तथा किस प्रकार धर्म सांस्कृतिक परंपराओं, रीति–रिवाजों एवं जीवन–शैली को प्रभावित करता है।
4. **आधुनिक भारतीय समाज में धर्म की भूमिका का मूल्यांकन करना–** इसके अंतर्गत यह विश्लेषण किया जाएगा कि आधुनिकता, वैश्वीकरण एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रभाव के बावजूद धर्म की भूमिका में क्या परिवर्तन आए हैं और वर्तमान समाज में उसकी प्रासंगिकता किस रूप में विद्यमान है।

इस प्रकार, उपर्युक्त उद्देश्यों के माध्यम से धर्म के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक पक्षों का समग्र अध्ययन किया जाएगा।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मकएवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक पद्धति के अंतर्गत भारतीय समाज में धर्म की अवधारणा, स्वरूप एवं विभिन्न आयामों का व्यवस्थित एवं विस्तृत वर्णन किया गया है, जबकि विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से धर्म के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक प्रभावों का गहन अध्ययन एवं व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसके अंतर्गत विभिन्न प्रामाणिक स्रोतों जैसे पुस्तकें, शोध–पत्र, पत्रिकाएँ, धार्मिक ग्रंथ तथा समाजशास्त्रीय अध्ययनों का उपयोग किया गया है। विशेष रूप से भारतीय समाज एवं संस्कृति से संबंधित विद्वानों के विचारों तथा पारंपरिक ग्रंथों का अध्ययन कर विषय की व्यापक समझ विकसित की गई है।

अध्ययन में उपलब्ध साहित्य का समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे विभिन्न दृष्टिकोणों को समझकर संतुलित निष्कर्ष तक पहुँचा जा सके। साथ ही, तथ्यों की व्याख्या करते समय सामाजिक संदर्भ एवं वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखा गया है, जिससे अध्ययन अधिक प्रासंगिक एवं यथार्थपरक बन सके।

यद्यपि यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, फिर भी प्रयुक्त सामग्री की प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता का विशेष ध्यान रखा गया है। इस प्रकार अपनाई गई शोध पद्धति अध्ययन को वैज्ञानिक, व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने में सहायक सिद्ध होती है।

भारतीय समाज में धर्म की भूमिका

1. सामाजिक नियंत्रण का माध्यम

   भारतीय समाज में धर्म सामाजिक नियंत्रण का एक प्रभावी साधन रहा है। धर्म द्वारा निर्धारित नियम, आचार–संहिताएँ तथा पाप–पुण्य एवं कर्म–सिद्धांत जैसी अवधारणाएँ व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करती हैं। इन मान्यताओं के कारण व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करने तथा अनुचित कार्यों से बचने का प्रयास करता है। परिणामस्वरूप समाज में अनुशासन, व्यवस्था एवं संतुलन बना रहता है।

2. **नैतिक मूल्यों का विकास**

   धर्म ने मानव जीवन में नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, त्याग, सहिष्णुता जैसे गुण विभिन्न धर्मों की मूल शिक्षाएँ हैं। ये मूल्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण के साथ–साथ सामाजिक जीवन को संतुलित एवं आदर्श बनाते हैं। धर्म के माध्यम से व्यक्ति में नैतिक चेतना का विकास होता है, जो उसे सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक बनाती है।

3. **सामाजिक एकता एवं समरसता**

   धर्म सामाजिक एकता एवं समरसता को सुदृढ़ करने में सहायक होता है। विभिन्न धार्मिक पर्व, त्योहार, अनुष्ठान एवं सामूहिक प्रार्थनाएँ समाज के लोगों को एक मंच पर लाती हैं, जिससे आपसी सहयोग, भाईचारा एवं सद्भाव की भावना विकसित होती है। यद्यपि विभिन्न धर्मों में विविधताएँ हैं, फिर भी धर्म लोगों को जोड़ने और सामाजिक समन्वय स्थापित करने का कार्य करता है।

4. **संस्कृति एवं परंपराओं का संरक्षण**

   भारतीय संस्कृति का मूल आधार धर्म है। देश की कला, साहित्य, संगीत, नृत्य, लोककथाएँ एवं परंपराएँ धर्म से गहराई से जुड़ी हुई हैं। धार्मिक मान्यताएँ एवं रीति–रिवाज पीढ़ी–दर–पीढ़ी स्थानांतरित होते हुए सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हैं। इस प्रकार धर्म न केवल सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखता है, बल्कि उसे समृद्ध भी करता है।

5. **शिक्षा एवं जीवन–दर्शन**

   प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था धर्म पर आधारित थी। गुरुकुल प्रणाली, वेद, उपनिषद एवं बौद्ध विहार जैसी संस्थाएँ धर्म–प्रेरित शिक्षा के केंद्र थीं। धर्म ने व्यक्ति को जीवन के

उद्देश्य, कर्तव्यों एवं मूल्यों का ज्ञान कराया, जिससे वह एक आदर्श नागरिक बन सके। धर्म के माध्यम से जीवन–दर्शन का विकास होता है, जो व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता प्रदान करता है।

आधुनिक संदर्भ में धर्म की भूमिका

आधुनिक भारतीय समाज में धर्म की भूमिका में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिलता है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा एवं वैश्वीकरण के प्रभाव से लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। आज धर्म केवल सामूहिक आस्था तक सीमित न रहकर अधिकतर व्यक्तिगत आस्था एवं पहचान का विषय बनता जा रहा है। भारतीय संविधान के अनुसार भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है, जहाँ सभी धर्मों को समान सम्मान एवं स्वतंत्रता प्राप्त है। इसके बावजूद धर्म सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति बनाए हुए है।

आधुनिक संदर्भ में धर्म की भूमिका निम्न रूपों में देखी जा सकती है–

1. **नैतिक मार्गदर्शन–** धर्म आज भी व्यक्ति को नैतिक मूल्यों एवं आचरण के लिए प्रेरित करता है।
2. **सांस्कृतिक पहचान–** धर्म व्यक्ति एवं समाज की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में सहायक है।
3. **सामाजिक समरसता–** विविधता के बीच एकता स्थापित करने में धर्म की भूमिका महत्वपूर्ण बनी हुई है।
4. **व्यक्तिगत आस्था–** आज धर्म अधिक व्यक्तिगत विश्वास एवं आध्यात्मिक संतोष का माध्यम बन गया है।

हालाँकि, कुछ परिस्थितियों में धर्म का दुरुपयोग सामाजिक विभाजन का कारण भी बन सकता है, इसलिए आवश्यक है कि धर्म को सकारात्मक एवं मानवीय दृष्टिकोण से अपनाया जाए।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतीय समाज में धर्म ने परंपरागत एवं आधुनिक दोनों ही संदर्भों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बदलते समय के साथ इसके स्वरूप में परिवर्तन अवश्य आया है, किन्तु इसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में धर्म केवल व्यक्तिगत आस्था या पूजा–पद्धति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सशक्त सामाजिक संस्था के रूप में कार्य करता रहा है। धर्म ने समाज को नैतिक दिशा प्रदान करते हुए व्यक्ति के आचार–विचार, व्यवहार एवं जीवन–दृष्टि को प्रभावित किया है। इसके माध्यम से सत्य, अहिंसा, करुणा, प्रेम एवं सहिष्णुता जैसे नैतिक मूल्यों का विकास हुआ, जिसने सामाजिक जीवन को संतुलित एवं व्यवस्थित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इसके अतिरिक्त, धर्म ने भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कला, साहित्य, संगीत एवं लोक–जीवन में धर्म की गहरी छाप दिखाई देती है, जिससे सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है। साथ ही, धर्म ने सामाजिक एकता एवं समरसता को सुदृढ़ करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जहाँ विभिन्न धार्मिक समुदाय सह–अस्तित्व एवं सहिष्णुता के साथ जीवन यापन करते हैं।

हालाँकि आधुनिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं वैश्वीकरण के प्रभाव से धर्म के स्वरूप एवं भूमिका में परिवर्तन आया है, फिर भी इसकी उपयोगिता समाप्त नहीं हुई है। आज धर्म अधिकतर व्यक्तिगत आस्था का विषय बनता जा रहा है, किन्तु सामाजिक नैतिकता, सांस्कृतिक पहचान एवं सामूहिक जीवन में इसकी भूमिका अब भी अत्यंत महत्वपूर्ण बनी हुई है।

अतः यह स्पष्ट है कि भारतीय समाज में धर्म की प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी विद्यमान है। आवश्यकता इस बात की है कि धर्म को सकारात्मक, मानवीय एवं समन्वयकारी दृष्टिकोण से अपनाया जाए, ताकि यह समाज में शांति, सद्भाव एवं एकता को और अधिक सुदृढ़ कर सके।

संदर्भ सूची

1. Datt, G. (2015). भारतीय समाजशास्त्र, नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान।

2. Majumdar, D. N. (2018). भारतीय समाज और संस्कृति, नई दिल्ली: किताब महल।
3. Dube, S. C. (2017). आधुनिक भारत में परंपरा और परिवर्तन, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
4. Sharma, R. D. S. (2016). भारतीय संस्कृति और धर्म, पटना: लोकभारती प्रकाशन।
5. Singh, R. (2019). धर्म और समाज, लखनऊ: हिंदी ग्रंथ अकादमी।
6. वेद। (तिथि उपलब्ध नहीं)। प्राचीन भारतीय धार्मिक ग्रंथ।
7. उपनिषद, (तिथि उपलब्ध नहीं)। प्राचीन दार्शनिक ग्रंथ।
8. श्रीमद्भगवद्गीता। (तिथि उपलब्ध नहीं)। पवित्र धार्मिक ग्रंथ।
9. NCERT। (2020). भारतीय समाज एवं संस्कृति, नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
10. UNESCO। (2021). संस्कृति एवं सामाजिक समरसता रिपोर्ट, पेरिस: यूनेस्को।